E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(2): 152-155
Received: 05-02-2021
Accepted: 09-03-2021

डॉ. रावेन्द्र सिंह
क्रीड़ा अधिकारी, शासकीय महाविद्यालय, गोहपारू जिला शहडोल, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रावेन्द्र सिंह
क्रीड़ा अधिकारी, शासकीय महाविद्यालय, गोहपारू जिला शहडोल, मध्य प्रदेश, भारत

शहडोल जिले में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. रावेन्द्र सिंह

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है। शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। खेल मनोरंजन का साधन ही नहीं बल्कि, प्रतिभावान खिलाड़ियों का भविष्य है। खिलाड़ियों द्वारा गाँवों की पगडंडियो से लेकर मेडल तक के सफर में विभिन्न झंझावातो से जूझना होता है, जो खिलाड़ियो के आत्मविश्वास, दृढ़ता एवं जोश को प्रकट करता है।

मुख्यशब्दः शहडोल जिला, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, महाविद्यालय, पुरुष हॉकी खिलाड़ी, संवेगात्मक बुद्धि।

1. प्रस्तावना
भारत एक विकासशील राष्ट्र हैं। अतः समकालीन भारतीय खेलो के सभी प्रश्न विकास की प्रक्रिया से अभिन्न रूप से जुड़े हैं। इस दृष्टिकोण से विकास और राजनीति की अंतः क्रिया का अध्ययन अपरिहार्य भी बन जाता है और जटिल भी।[1] हॉकी खेल का अपना इतिहास है, उसकी एक सांस्कृतिक विरासत है। भारतीय राष्ट्रीय खेल हॉकी के इतिहास को मेजर ध्यानचन्द्र के बिना देखने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है जिनके विराट व्यक्तित्व एवं वैविध्यपूर्ण खेल ने जर्मनी के तानाशाह हिटलर को भी प्रभावित किया।
भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी को कभी विश्व पटल पर अभेद, दुर्ग माना जाता था। जब भारतीय खिलाड़ी खेल मैदान पर होते थे, तो दूसरा पक्ष विजय के लिए नहीं वरन् सम्मान जनक पराजय हेतु संघर्ष करता हुआ नजर आता था, तभी तो विश्व विजय को निकले जर्मनी के तानाशाह एडोल्फ हिटलर ने हॉकी के जादूगर के नाम से प्रसिद्ध मेजर ध्यान चन्द्र को प्रलोभन देते हुए अपने देश की टीम हेतु कार्य करने के लिए कहा, जो मेजर द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। कुछ लोगों के द्वारा तो यहाँ तक कहा जाता था, कि मेजर अपने हॉकी से बॉल को ऐसे विपक्षी गोल तक पहुचाते थे, मानो उनके स्टीक में चुम्बकीय शक्ति हो, जो बॉल को हॉकी स्टीक से अलग नहीं होने देतीं। कभी ऐसे महान् खिलाड़ियो से सुसज्जित भारतीय हॉकी आज दोयम दर्जे की मानी जाने लगी हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता :
खेल मानव जीवन के विकास का आधार एवं बाल जीवन का प्राण तत्व और मूल अधिकार है। खेल के माध्यम से बालक–बालिकाएँ अपनी नैसर्गिक प्रवृत्तियों एवं अपने संवेगों के प्रबंधन को उत्तम दिशा देते है। खेलों का महत्व मानव जीवन में अनेक दृष्टिकोणों से शिक्षात्मक उपागम के रूप में हैं। मानवीय मूल्य भावनात्मक विकास, धैर्य, अनुशासन, मित्रता, सहयोग, ईमानदारी, प्रतिस्पर्धा एवं नेतृत्व व्यवहार जैसे गुण, उपदेशों से अधिक बालक–बालिकाएँ खेलों के माध्यम से सहज रूप से सीख लेते है। बच्चों में स्वस्थ आदतें डालने तथा शारीरिक स्वास्थ्य के निर्माण के लिए विशेष प्रयत्नों की आवश्यकता होती है क्योंकि अच्छी आदतों की नींव यदि बचपन में रखी जाती है तो अधिक कारगर सिद्ध होती है। शरीर को स्वस्थ व पुष्ट रखने के लिए खेलकूद व व्यायाम आवश्यक है। केवल पुस्तक ज्ञान व्यक्ति को महान् नहीं बना सकता। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए उसके शारीरिक पक्ष का विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है क्योंकि अन्य प्रकार के विकास के लिए आधार स्वस्थ शरीर ही प्रदान करता है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य :
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है।
- शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है।
- शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक सहसंबंध ज्ञात करना है।

4. शोध की परिकल्पनाएँ :

परिकल्पनाओं के निर्माण के बिना शोध कार्य करना लगभग असम्भव है। शोधार्थी को परिकल्पना को निर्मित करने के पूर्व यह भी जानना आवश्यक होता है कि वह किस प्रकार की परिकल्पना का चयन अपने शोध कार्य करने हेतु कर रहा है, क्योकि विभिन्न वैज्ञानिकों ने परिकल्पना के कई प्रकार बनाए है, जैसे– मैकयुगन ने परिकल्पनाओं को दो भागो में विभक्त किया है। सार्वभौमिक परिकल्पना (Universal Hypothesis) एवं अस्तित्व मूलक परिकल्पना (Existeutial Hypothesis) जबकि कार्लिंगर ने तीन प्रकार की परिकल्पनाओं का उल्लेख किया हैः– सरल परिकल्पना, नकारात्मक परिकल्पना एवं गुप्त सम्बन्ध व्यक्त करने वाली परिकल्पना। चेम्बरलिन ने एक अन्य प्रकार की बहुला परिकल्पना का उल्लेख किया है। रोलेल्ड फिशर ने उपर्युक्त परिकल्पनाओं से अलग शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) को स्वीकार किया है। इस परिकल्पना को सांख्यिकीय परिकल्पना भी कहते हैं।

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नवत तथ्य प्राप्त होगे–

1. शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने शहडोल जिले के एक शहरी क्षेत्र से महाविद्यालय व एक ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को अपना अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना है। जिसमें 30 विद्यार्थी शहरी क्षेत्र व 30 ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थी जो हॉकी खेल के प्रति सहभागिता रखते है।

6. अध्ययन विधि :

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों का एकत्रीकरण प्रश्नावली प्रपत्र विधि द्वारा शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण द्वारा किया है।

चरों का विवरण : व्यक्तित्व, चिंता, उपलब्धि प्रोत्साहन प्रेरणा,

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा, एच.के. एवं सिंह, टी.के. (1988)[2], पाण्डेय, के.पी., (1985)[3], गुप्ता एस.पी. (2001)[4], मेहता, सी. (1970)[5], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6] बाना, कमलेश एम.एल. एवं पीटरसन, ए.जे. (2012)[7], चौबे, एम. पाठक, कुमार, जे. एवं द्विवेदी, ए.पी. (1986)[8] एवं सिंह, गोपेश कुमार (2014)[9] ने शोध विधि एवं विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शहडोल जिले का सामान्य परिचय :

शहडोल जिला भारत वर्ष के हृदय स्थल मध्य प्रदेश के उत्तर–पूर्वी भाग में $22^0 38'$ उत्तरी अक्षांश से $24^0 20'$ उत्तरी अक्षांश एवं $30^0 28'$ पूर्वी देशांतर से $82^0 12'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। शहडोल जिले का नाम सोहागपुर गॉव के शहडोलवा अहिर के नाम पर आधारित है। शहडोल जिले का कुल क्षेत्रफल 5671 वर्ग कि.मी. है। इस जिले की उत्तर से दक्षिण की अधिकमतम लम्बाई 170 कि.मी. तथा पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 110 कि.मी. है। प्रशासकीय दृष्टि से शहडोल जिले में चार तहसीलें–सोहागपुर, जैतपुर, ब्यौहारी, एवं जयसिंहनगर हैं। तथा पॉच विकासखण्ड–सोहागपुर, पाली, ब्यौहारी, बुढ़ार एवं जयसिंहनगर हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्र. 1 : शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		सामाजिक स्तर पर हॉकी खिलाड़ी	मनोवैज्ञानिक स्तर पर हॉकी खिलाड़ी
समूह की संख्या (N)		30	30
मध्यमान (M)		33.67	33.33
मानक विचलन (SD)		9.21	8.20
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.15	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

विश्लेषण एवं व्याख्या :
उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औसत 33.67 तथा मानक विचलन 9.21 है। शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि स्तर औसत 33.33 तथा मानक विचलन 8.20 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.15 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 0.15 से कम है। अतः शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्र. 2 : शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		सामाजिक स्तर पर हॉकी खिलाड़ी	मनोवैज्ञानिक स्तर पर हॉकी खिलाड़ी
समूह की संख्या (छ)		30	30
मध्यमान (ड)		35.00	32.74
मानक विचलन (क)		10.00	8.69
क्रान्तिक निष्पत्ति (ब्नत्व्द्ध		0.92	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

विश्लेषण एवं व्याख्या :
उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औसत 35.00 तथा मानक विचलन 10.00 है। शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि स्तर औसत 32.74 तथा मानक विचलन 8.69 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.92 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 0.15 से कम है। अतः शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्र. 3 : शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

सारणी क्र. 3 : शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में सहसंबंध का अध्ययन

चर ;अंतपंइसमद्ध	संख्या ;छद्ध	सहसंबंध ;तद्ध	मुक्तांश ;कद्धि
शहरी व ग्रामीण क्षेत्र पुरुष हॉकी खिलाड़ी	60	0.981	58

'0.05 स्तर पर आर का मान = 0.231

विश्लेषण एवं व्याख्या :
उपर्युक्त सारणी में शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसंबंध आर = 0.981 एवं मुक्तांश 58 है। यह आर तालिका के मान से ज्यादा है। इसलिए आर का मूल्य सार्थक की वजह से परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष :

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शहडोल जिले के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शहडोल जिले के ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. शहडोल जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर पुरुष हॉकी खिलाड़ियों के मध्य खेल संवेगात्मक बुद्धि में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

अतःबच्चों के सर्वांगीण विकास में खेल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन खेलों द्वारा बालकों में त्वरित निर्णय क्षमता, वस्तुओं की जानकारी, समायोजन, समन्वय, सदभाव, साहस, सहआस्तित्व जैसे गुणों का स्वभाव में स्वतः ही विकास हो जाता है।

12. सन्दर्भ ग्रंथ :

1. यादव सुषमा, शर्मा राम अवतार – भारतीय राजनीति ज्वलंत प्रश्न, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यायल, ई0 ए0/6, मॉडल टाउन, दिल्ली, 1994.
2. शर्मा, एच.के. एवं सिंह, टी.के. – ''स्वास्थ्य शिक्षा एवं शरीर विज्ञान'', पण्डित प्रकाशन पण्डित हाऊस, जयपुर, 1988, पृ. सं.–33.
3. पाण्डेय, के.पी. – ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
4. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. पीटरसन, ए.जे. – हॉकी खिलाड़ियों के मनोवैज्ञानिक और खेल विशिष्ट विशेषताओं, डॉक्टरेट शोध कार्य, ज्यूरिख स्विटजरलैण्ड अध्यापन विश्वविद्यालय, 2012.
8. चौबे, एम. पाठक, कुमार, जे. एवं द्विवेदी, ए.पी. – ''शारीरिक शिक्षा के मूलाधार'', कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना–दिल्ली, 1986, पृ.सं.189.
9. सिंह, गोपेश कुमार. – ''इलाहाबाद जनपद के हॉकी खिलाड़ियों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति का समीक्षात्मक–निदानात्मक अध्ययन'', अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), 2014.